परमात्मा परमशिक्षक के रूप में

➡ ब्रह्माकुमार उर्मिला, संयुक्त संपादिका

भक्ति मार्ग का एक सुप्रसिद्ध श्लोक जिसमें भगवान की महिमा की गई है, इस प्रकार है,

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव
त्वमेव सर्व मम देव देव।।

इस श्लोक में परमात्मा पिता को माता, पिता, बन्धु, सखा के साथ-साथ विद्या भी माना गया है। भगवान ही विद्या हैं इसका अर्थ यही हुआ कि उनको जानना ही विद्या है और वो जो सिखाते हैं, वही विद्या है। अत: परमात्मा ही परमशिक्षक हैं अर्थात् शिक्षकों के भी शिक्षक हैं।

शिक्षक भी याद करता है परमशिक्षक को

भारत के हर विद्यालय में प्रतिदिन की पढ़ाई का प्रारम्भ परमात्मा पिता के प्रति प्रार्थना से होता है जिसमें उनके गुणों और कर्त्तव्यों की महिमा होती है। लौकिक शिक्षक द्वारा पढ़ाई का प्रारम्भ होने से पहले परमशिक्षक से वरदान, बुद्धि, शक्ति लेना अनिवार्य है। यदि किसी बच्चे को कोई पाठ याद नहीं हो पाता तो शिक्षक भी यही दुआ करता है, हे परमपिता, इसे सद्बुद्धि दो ताकि यह पढ़ाई को आत्मसात् कर सके। स्वयं शिक्षक होते भी वह परमशिक्षक की सहायता चाहता है।

कौन-से ज्ञान बिना गति नहीं

वर्तमान युग ज्ञान के विस्फोट का युग है। रेडियो, टी.वी., समाचार-पत्र, इंटरनेट, पुस्तकालय, पत्रिकाएँ तथा शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रतिदिन अथाह ज्ञान परोसा जाता है फिर भी हम ज्ञान के प्यासे हैं और भगवान को कहते हैं, 'नयनहीन को राह दिखाओ प्रभु', 'तमसो मा ज्योतिर्गमय', 'हे प्रभु ज्ञान दो' आदि-आदि। यह भी कहा गया है, 'ज्ञान बिना गति नहीं।' प्रश्न है कि कौन-से ज्ञान बिना गति नहीं? क्या डॉक्टर बनने का ज्ञान नहीं पढ़ेंगे तो गति नहीं होगी? क्या वकालत का ज्ञान नहीं पढ़ेंगे तो गति नहीं होगी? क्या इन्जिनियर बनने का ज्ञान नहीं पढ़ेंगे तो गति नहीं होगी? ऐसा नहीं है। जिस ज्ञान बिना गति नहीं, वह है आत्म-ज्ञान, परमात्म-ज्ञान, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान, कर्म-गति का ज्ञान। इसी ज्ञान की मांग हम परमात्मा से करते हैं और इसीलिए वो परमशिक्षक हैं।

मानव से देव बनने की पढ़ाई परमात्मा द्वारा

आई.ए.एस.,सर्जन, न्यायाधीश, राजनेता आदि बनना आज के युग में उच्च उपलब्धि माना जाता है, जो लौकिक पढ़ाई से सम्भव है। इन उपलब्धियों को पाकर पद, पैसा, प्रतिष्ठा तो मिल जाते हैं परन्तु लम्बी आयु, निरोगी काया, ऊँचा चरित्र, मधुर सम्बन्ध, मन की शान्ति आदि भी मिलें, इसकी कोई गारन्टी नहीं है। इसकी भेंट में, परमशिक्षक परमात्मा शिव जो पारलौकिक पढ़ाई पढ़ाते हैं वह ऐसी है जिसमें सर्वोच्च मान, पद, प्रतिष्ठा के साथ अखुट धन, कंचन काया, परम पवित्र सद्गुणी मन तथा विश्ववंदनीय चरित्र प्राप्त होता है। यह पढ़ाई है नर से श्रीनारायण तथा नारी से श्रीलक्ष्मी बनने की अर्थात् मानव से देवता बनने की। इसके लिए कहा गया है, 'जिन मनुष्य से देवता किए करत न लागी वार'।

समय के साथ शिक्षा का बदलता स्वरूप

संसार में शिक्षा का स्वरूप सदा एक-सा नहीं रहा है। समय और युग की मांग के अनुसार इसका रूप बदलता आया है। सतयुग-त्रेता में दैवी राजकुमारों ने स्वर्णनिर्मित कक्षों में, स्वर्णनिर्मित पट्टिकाओं पर, स्वर्णतूलिका से प्राकृतिक चित्र उकेरे, सामूहिक नृत्य (रास), गायन, वादन और भाषा सीखी – यही उनकी पढ़ाई थी। वैदिक काल में उसी शिक्षा में कठोर तप और श्रम का समावेश हो गया। ब्रह्ममुहूर्त में उठना, ठण्डे जल से स्नान करना, जंगल से लकड़ी लाना, भिक्षाटन से जीवन चलाना – यह गुरुकुलों की दिनचर्या थी। मुस्लिम बादशाहों के राज्यकाल में शिक्षा मुल्ला-मौलवियों के हाथों में चली गई। अंग्रेज़ों के काल में यह आजीविका का साधन बनी। आज की शिक्षा अंग्रेज़ी प्रणाली पर आधारित है। करोड़ों को साक्षर बनाने का कार्य शिक्षा का वर्तमान ढांचा कर रहा है।

धर्मग्लानि बनाम शिक्षा की ग्लानि

शिक्षार्थियों की संख्या, शिक्षा संस्थाओं और पाठ्यक्रमों का विस्तार होते भी आज शिक्षितों की आन्तरिक शक्तियाँ बुझी पड़ी हैं जबकि शिक्षा का असली उद्देश्य उन्हीं को जगाना था। भगवान का अवतरण धर्मग्लानि के समय धरती पर होता है। हर जड़-चेतन का अपना-अपना धर्म होता है। यदि धरती स्थिरता छोड़ दे, हिलने लगे तो यह धरती के धर्म की ग्लानि है। यदि पिता कमाना और पालना करना छोड़ दे तो यह पिता के धर्म की ग्लानि है। इसी प्रकार शिक्षा जब चरित्र-निर्माण करना छोड़ दे, आन्तरिक बल को जगाना छोड़ दे तो यह शिक्षा की ग्लानि है और जब शिक्षा की ऐसी ग्लानि हो जाती है तभी परमात्मा को परमशिक्षक के रूप में पार्ट बजाना पड़ता है।

केवल एक जन्म के लिए शिक्षक

हमारे समाज में गुरु वो है जो गौरव प्रदान करे, मास्टर वो है जो माँ के स्तर पर आकर शिक्षा दे, आचार्य वो है जो आचरण के द्वारा शिक्षा दे। इतनी महिमा वाले लौकिक शिक्षक केवल एक जन्म के शिक्षक हैं। आज वे जिस बच्चे को पढ़ा रहे हैं, पूर्वजन्म में भी उसके शिक्षक थे, इसकी गारंटी नहीं है। अगले जन्म में भी बनेंगे, कोई गारंटी नहीं है। जैसे माता-पिता हर जन्म में बदल जाते हैं, शिक्षक भी बदल जाते हैं। एक ही जन्म में कई-कई शिक्षक बन जाते हैं परन्तु परमात्मा शिव एक ही हैं और जन्म-जन्म के परम शिक्षक हैं। लेख के आरम्भ का श्लोक हमने हर जन्म में गाया है और उन्हीं के लिए गाया है।

केवल एक जन्म के लिए शिक्षा

जैसे लौकिक शिक्षक एक जन्म साथ देता है ऐसे ही लौकिक शिक्षा भी मात्र एक जन्म साथ निभाती है। मान लीजिए, कई शिक्षकों की प्रेरणा, मेहनत, शिक्षा से एक विद्यार्थी आई.ए.एस. बन गया। इस पद तक पहुँचने में उसे 30 वर्ष लग गए और इस पद पर उसने 30 साल नौकरी की। एक वर्ष की पढ़ाई के बदले 1 वर्ष का पद, उसकी प्राप्ति का औसत इस प्रकार निकला। शरीर छोड़ने के बाद इसी आई.ए.एस.डिग्रीधारी की आत्मा को नए शरीर द्वारा फिर से क, ख, ग... सीखने पड़ेंगे। यह कह नहीं सकेगा कि मैं पिछले जन्म का आई.ए.एस हूँ तो इस जन्म में बिना पढ़े ही वह डिग्री दे दो क्योंकि पद और पढ़ाई दोनों विस्मृत हो जाएँगे। ऐसी कोई दैवी या स्वत: स्फुरित प्रणाली भी नहीं है कि पिछली पढ़ाई के आधार पर अगले जन्म में पद मिले।

21 जन्मों के लिए शिक्षा और पद

परन्तु परमात्मा, परमशिक्षक के रूप में जो कुछ पढ़ाते हैं वह आत्मा के साथ जाता है, फलस्वरूप 21 जन्मों तक वह आत्मा जन्म-पुनर्जन्म की कड़ी में देव पद पाती ही रहेगी। परमात्मा परमशिक्षक के रूप में जो पढ़ा रहे हैं वह पढ़ाई अविनाशी है। एक जन्म के पुरुषार्थ के बदले 21

जन्मों का सुख देने वाली है। वह केवल धन और प्रतिष्ठा की प्राप्ति तक सीमित नहीं बल्कि सर्वांगीण सुख देने वाली है। परमशिक्षक परमात्मा की पढ़ाई का पद वर्तमान में आँखों से नहीं दिखता पर बुद्धियोग बल से महसूस होता है कि भविष्य में 21 जन्म देवता बनने वाला हूँ। मानवीय पढ़ाई का पद वर्तमान में दिखता है पर भविष्य जन्म में उसका कोई फल नहीं है। अधिकतर लोग केवल वर्तमान के अल्पकाल के फल को देखते हैं और भविष्य की प्राप्तियों को उपेक्षित करते हैं इसलिए परमात्मा पिता की पढ़ाई से वंचित रह जाते हैं।

ईश्वरीय पढ़ाई में उम्र, जाति, धर्म, भाषा, लिंग का कोई बन्धन नहीं है। लौकिक रीति से अनपढ़ भी इसे पढ़ सकता है। गोद के बच्चे से लेकर 100 वर्ष के बुजुर्ग – सभी के लिए यह उपलब्ध है। इसमें पारम्परिक शिक्षा की तरह यूनिफार्म, फीस आदि की औपचारिकताएँ नहीं हैं। कम खर्च में होने वाली यह पढ़ाई बुद्धि के सारे पट खोल देती है और मानव को इतना दिव्य बुद्धिमान बना देती है कि आधाकल्प लोग इन्हीं की यादगारों से सद्बुद्धि का वरदान मांगते हैं। विद्या की देवी सरस्वती ने इसे पढ़ा, इसी से श्री लक्ष्मी पद पाया और आज भी हम विद्यादायिनी से विद्या और सद्बुद्धि मांगते हैं। आज वही समय चल रहा है। सन् 1937 से परमात्मा शिव, पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के मानवीय तन का आधार ले परमपिता, परमशिक्षक और परमसद्गुरु इन तीनों रूपों से मानवात्माओं की पालना, पढ़ाई और सद्गति की सेवा पर उपस्थित हैं। आप भी अवश्य लाभ लीजिये। अभी नहीं तो कभी नहीं। 😊

जब बाबा ऑटो में साथ बैठ गए

कमला बहन, जबलपुर (प्रेमनगर)

दो बच्चों की असमय मृत्यु के कारण मैं मानसिक रूप से बहुत अस्थिर और अधीर रहा करती थी। मेरी आस हर तरफ से टूट चुकी थी। एक बार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र के सामने से गुज़रते हुए खुद-ब-खुद मेरे कदम अन्दर की ओर चले गए। बहन जी के कहने पर ज्ञान का कोर्स कर लिया। मुझे लगा कि शिव बाबा ने मेरे दुख दूर करने के लिए अपने पास बुला लिया है। मैं रोज ज्ञान-योग की क्लास करने लगी।

एक बार मुझे संपत्ति के एक सौदे के लिए बड़ी रकम एक व्यक्ति को देनी थी। मैं शहर की सड़कों के बारे में ज्यादा नहीं जानती थी और हमेशा की तरह ऑटो रिक्शा करके चलने को तैयार हुई। ऑटो में बैठने के बाद किसी रिश्तेदार का फोन आने पर जैसे ही मैंने बैग से मोबाइल निकाला, तो ऑटो वाले को अन्दर रखे पैसे दिख गये। उसके मन में लालच आ गया और वह मुझे जहाँ जाना था उसकी बजाय करीब दो घण्टे तक यहाँ-वहाँ यह कहकर घूमाता रहा कि रोड जाम है। मुझे जब लगा कि बहुत समय हो गया है तो घबरा कर मन ही मन बाबा को याद करने लगी कि आप ही मेरी रक्षा करें। इसके बाद उसने मुझे मेरे गंतव्य पर छोड़ा। मैं उसको तय रुपये (100) देने लगी तो उसने कहा, बहन जी, बीच में आपने एक बूढ़े दादा को भी ऑटो में बिठाया था, जिन्होंने मुझे कहा कि यहाँ-वहाँ मत घुमाओ, ऑटो को सीधे रास्ते ले चलो, मुझे उनका किराया भी चाहिए। मैं आश्चर्य से अवाक् हो गई। मैंने पर्स से बाप-दादा का फोटो निकाल कर उसे दिखाया तो वह बोला, हाँ, यही दादा थे। मैंने खुशी-खुशी उसको पैसे दे दिये।

अहो बाबा, आपने कैसे मेरी मदद की। अब तो मैं बाबा की याद की मस्ती में मस्त रहकर अपने सारे कार्य करती हूँ और उनके साथ का अनुभव सदा करती हूँ। मेरा दिल सदा बाबा के साथ के गीत गाता हुआ हर्ष में निश्चिंत रहता है। 😊